thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 9 अंक 32 21 से 27 अगस्त, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 भा. कृ. 11

सभा प्रधान बनने पर स्वामी आर्यवेश जी का विभिन्न जिलों में स्वागत का क्रम जारी

सोनीपत, हापुड़, गुरुकुल धीरणवास तथा हिसार में आयोजित हुए स्वागत समारोह

वेद भाष्य के पचास सेट के लिए सोनीपत की आर्य समाजों द्वारा एक लाख रुपये देने की घोषणा

स्वामी आर्यवेश जी के सार्वदेशिक सभा के प्रधान नियुक्त होने पर सारे देश के आर्यों में उत्साह की लहर है अनेकों आर्य समाजों एवं संस्थाओं में स्वामी जी के स्वागत समारोह आयोजित किये जा रहे हैं। युवा शक्ति का भरपूर सहयोग स्वामी जी को प्राप्त हो रहा है। इसी क्रम में पिछले दिनों सोनीपत, हापुड़, गुरुकुल धीरणवास तथा हिसार में स्वामी जी का भव्य सम्मान किया गया।

17 अगस्त को प्रात: 10 बजे दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सोनीपत में वरिष्ठ कार्य कर्ताओं की बैठक को सम्बोधित करने के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी को जुलूस के रूप में सैकड़ों आर्य युवकों तथा कार्यकर्ताओं के हुजूम के साथ आर्य समाज शान्तिनगर ले जाया गया। सारे रास्ते में आर्य समाज अमर रहे और स्वामी जी आगे बढ़ो हम आपके साथ हैं के नारों से वातावरण को गुंजायमान कर दिया। आर्य समाज शान्तिनगर सोनीपत में भव्य समारोह आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज शान्तिनगर सोनीपत तथा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में किया गया था। इस अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य, श्री सुखदेव आर्य तपस्वी, आचार्य संजय याज्ञिक, स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यवेश आदि ने अपने विचार रखें। डॉ. अनिल आर्य ने आर्य समाज के समस्त कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में संगठित होकर कार्य करें उन्होंने कहा कि युवा वर्ग को आर्य समाज से जोड़ना प्राथमिक आवश्यकता है। उन्होंने 7 सितम्बर को वेस्ट पंजाबी बाग, दिल्ली में होने वाले परिषद् के कार्यक्रम का निमन्त्रण भी दिया।

स्वामी आर्यवेश जी के उद्बोधन से पहले, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष श्री मनोहर लाल चावला तथा कार्यक्रम के संयोजक श्री हरिचन्द्र स्नेही ने स्वामी आर्यवेश जी का परिचय देते हुए यह घोषणा की कि सोनीपत की आर्य समाजों की ओर से वेद भाष्य प्रकाशन योजना में वे पचास वेद सैट की राशि एक लाख रुपये सार्वदेशिक सभा में यथा शीघ्र भिजवायेंगे। उनकी इस घोषणा का करतल ध्वनि से स्वागत किया गया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का माल्यार्पण तथा शॉल आदि भेंटकर भावपूर्ण अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन करने वालों में स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती, डॉ. अनिल आर्य, मनोहर लाल चावला, प्रिं.

आजाद सिंह बांगड़, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, आचार्य संजय याज्ञिक-मेरठ, सुखदेव आर्य तपस्वी, हरिचन्द्र स्नेही, श्री रामफल धुल, राजेन्द्र सिंह चहल, प्रताप सिंह शास्त्री-मंत्री आर्य समाज काठमण्डी, जय प्रकाश आर्य, सोहटी, श्री ओम प्रकाश आर्य गंगाना, महाशय चन्द्रभान आर्य, महावीर दहिया, रामचन्द्र दहिया आदि प्रमुख थे।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने युवाओं को आर्य समाज से जोड़ने पर बल देते हुए कहा कि हरियाणा में आर्य समाज की हजारों स्थानीय इकाइयाँ हैं। लाखों कार्यकर्ता पूर्ण उत्साह से आर्य समाज का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह भी सर्वमान्य है कि विभिन्न आन्दोलनों में आर्य समाज ने अपनी विशेष छाप छोड़ी है जिनमें हिन्दी आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन, शराबबन्दी आन्दोलन, बेटी बचाओ अभियान, युवा निर्माण अभियान आदि महत्त्वपूर्ण हैं। आर्य समाज को विघटन के दलदल से निकाल कर संगठित करके पूरे देश में विभिन्न सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जन-जागरण अभियान चलाया जायेगा। स्वामी जी ने आगामी विधानसभा चुनावों को देखते हुए सभी राजनैतिक पार्टियों से आह्वान किया कि हरियाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के मुद्दे को अपने घोषणा पत्र में घोषित करें। स्वामी जी ने आर्य समाज की सभी इकाइयों को निर्देश दिया कि वो स्थानीय स्तर पर नेताओं पर शराब बन्दी के लिए दबाव बनायें।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज में फैले विघटन को दूर करने के लिए हम विशेष रूप से प्रयास कर रहे हैं और बहुत शीघ्र आर्य समाज के सभी गुट एक मंच पर दिखाई देंगे। स्वामी जी ने कहा कि सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनते ही तीन संकल्प प्राथमिकता के साथ पूर्ण करने का व्रत मैंने लिया है। जिसमें आर्य समाज में फैले विघटन को दूर करना, घर-घर में ईश्वरीय ज्ञान वेदों को पहुँचाना और महिलाओं तथा युवकों को लाखों की संख्या में आर्य समाज से जोड़ना। स्वामी जी ने घोषणा की कि 23 नवम्बर, 2014 को रोहतक में प्रान्तीय युवा संकल्प महासम्मेलन का विशाल पैमाने पर आयोजन किया जायेगा और इसमें हरियाणा से दस हजार युवा भाग लेंगे। स्वामी जी ने आर्यों से अधिक से अधिक वेद सैट अपने अपने घरों, सम्बन्धियों और परिचितों के परिवारों में पहुंचाने की प्रेरणा देते हुए श्री मनोहर लाल चावला तथा कार्यक्रम के संयोजक श्री हरिचन्द्र स्नेही का 50 वेद सेट लेने की घोषणा का स्वागत किया तथा आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम सुस्वादु भोज के साथ उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज हापुड़ में स्वागत समारोह का आयोजन

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा हापुड़ तथा आर्य समाज हापुड़ के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी आर्यवेश जी के सम्मान में भव्य स्वागत समारोह का आयोजन आर्य समाज हापुड़ के विशाल प्रांगण में किया गया। स्वागत समारोह की अध्यक्षता जिला सभा के प्रधान डॉ. विकास अग्रवाल तथा आर्य समाज हापुड़ के प्रधान श्री प्रेम प्रकाश आर्य ने संयुक्त रूप से की। संयोजन श्री आनन्द प्रकाश जी ने किया। वेद प्रचार सप्ताह के अन्तिम दिन जन्माष्टमी के अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री राजदेव शास्त्री औरैया के प्रभावशाली व्याख्यान के उपरान्त सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी और सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का माल्यार्पण, शॉल उढ़ाकर तथा स्मृति चिन्ह भेंट कर भव्य स्वागत किया गया। सभा को सम्बोधित करते हुए पं. माया प्रकाश त्यागी ने योगेश्वर कृष्ण के जीवन से शिक्षा लेने के लिए यज्ञ एवं योग अपनाने पर बल दिया।

उन्होंने आर्य समाज में आई शिथिलता को दूर करने के लिए विशेष रूप से आर्य नेताओं का आह्वान किया कि वे आर्य समाज के सिद्धान्तों, मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार के लिए समय देना शुरू करें और उन वर्गों में काम करें जो अवसरों से वंचित हैं।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में सार्वदेशिक सभा की जिम्मेदारी लेने के बाद लिये गये संकल्पों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि उनकी प्राथमिकता आर्य समाज की एकता होगी। आर्य समाज में बिखराव, विघटन एवं मुकदमेंबाजी से जो हानि हो रही है उस पर चिन्ता व्यक्त करते हुए आह्वान किया कि अब समय आ गया है कि अपने निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर त्याग, समर्पण तथा उदारता का परिचय देना होगा तथा एक मंच पर पूरे आर्य समाज की शक्ति को संगठित करना होगा। उन्होंने आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्ता से एकता अभियान में सहयोग देने की अपील की। स्वामी जी ने वेद भाष्य प्रकाशन की वृहद योजना पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने वेद भाष्य प्रकाशन के लिए उपस्थित आर्यजनों से अपील की कि वे अपने-अपने घरें में वेद भाष्य मंगाने के लिए दीपावली से पहले 2100/- रुपये की राशि सभा कार्यालय में जमा करवा दें। स्वामी जी ने कहा कि वेद भाष्य प्रकाशन का कार्य बहुत बड़ा कार्य है और आप सबके सहयोग से ही यह पूर्ण हो पायेगा अत: दानी महानुभाव इस योजना के लिए अधिक से अधिक दान दें। हम उनके भी आभारी होंगे। स्वामी जी ने कहा कि युवा शक्ति की आर्य समाज को बहुत आवश्यकता है उनको किस प्रकार दीक्षित तथा प्रशिक्षित किया जा सकता है उस पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि अपने समाज के सदस्यों की संख्या बढ़ायें और उनमें युवाओं तथा महिलाओं को विशेष रूप से स्थान दें। स्वामी जी ने जन्माष्टमी के अवसर पर श्री कृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान करते हुए कहा कि अधर्म (अन्याय) अनाचार, अत्याचार, शोषण एवं समाज में चल रही अनैतिकता के विरुद्ध यदि हम बोलना शुरू कर दें और उसके बाद संघर्ष छोड़ दें तो कृष्ण की सही मायनें में पूजा कर सकेंगे। उनकी पूजा का तात्पर्य धूप-बत्ती जलाना और आरती उतारना नहीं है अपितु उनके आचरण को अपने जीवन में उतारना है। स्वामी जी ने कहा कि श्रीकृष्ण ने बचपन से लेकर अन्त तक अन्याय का विरोध किया तथा महाभारत का युद्ध अर्जुन का सारथी बनकर लड़ा। ऐसे महान योगी और नीतिज्ञ कृष्ण के जन्मोत्सव पर हम सभी को जहाँ अन्याय हो वहीं

शेष पृष्ठ 5 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन आगामी 13 व 14 सितम्बर, 2014 को दिल्ली में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन आगामी 13 व 14 सितम्बर, 2014 को दिल्ली के आर्य समाज क्लब रोड, शालीमॉर बाग पश्चिम में आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध सभी प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधियों को अधिवेशन की विषय सूची (एजेण्डा) पृथक डाक से भेजी जा रही है। सभी प्रतिनिधियों से निवेदन है कि दिल्ली में आयोजित होने वाले सभा के साधारण अधिवेशन में भाग लेने के लिए उपरोक्त निर्धारित तिथि एवं समय पर सम्मेलन स्थल पर पधारकर संगठन को सक्रिय बनाने में सहयोग प्रदान करें।

-प्रो. विट्ठलराव आर्य, मंत्री सार्वदेशिक सभा

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

आस्था ही नहीं, खतरे को भी पहचानें

– डॉ. हेमंत गुप्ता

गंगा को सिर्फ आस्था और विश्वास ही नहीं वैज्ञानिक नजरिये से भी देखने की जरूरत है। आस्था की वजह से लोग गंगा का दर्शन और इसके जल से आचमन ही नहीं करते, इसके तट पर बसने में भी अपार पुण्य मानते हैं, लेकिन गंगा के तट पर रहने वाले और यहां आते रहने वाले श्रद्धालुओं व पर्यटकों को पता ही नहीं कि यहां वे कितने खतरों का शिकार होते हैं।

लोगों को यह पता ही नहीं कि यहाँ का पानी अपने अंदर कितने जलजनित जीवाणु, फफूंद, परजीवी और विषाणु समाए हुए हैं। इनमें से कोई भी किसी भी स्वस्थ व्यक्ति को कभी भी आंत या पेट की भारी जलन, हैजा, उल्टी-दस्त, अपच, मियादी बुखार, संक्रामक हेपेटाइटिस, परजीवी संक्रमण, त्वचा रोग, मूत्र संक्रमण और ऐसे ही कई तरह की बीमारियों का शिकार बना सकते हैं।

इंसान तक कैसे पहुंचता है खतरा

सेलमोनेला टाइफूमूरियम - मियादी बुखार, एरोमोनस एसपीपी यूरिन से लेकर फेफड़े और त्वचा तक का संक्रमण, शगेला सोनेई खूनी पेचिश

गत वर्ष मार्च से जून के दौरान हमने गंगा तट पर बसे उत्तर प्रदेश के प्रमुख शहर वाराणसी के घाटों के पानी की गुणवत्ता का अध्ययन किया। यहाँ के 18 घाटों से पानी के 132 नमूने लिए। इन नमूनों के आधार पर रोगजनक सूक्ष्म जीवों की भी पहचान की गई। वाराणसी में जिस तरह सालों भर लोगों को मियादी बुखार होता रहता है इसका कारण इस क्षेत्र में सालमोनेला एसपीपी की मौजूदगी हो सकती है। इसी तरह संक्रमणों की वजह वह जल हो सकता है, जिसका उपयोग लोग पीने, नहाने और दूसरे घरेलू कामों में करते हैं। यह भी जाहिर है कि गंगा के तट पर बसा उत्तर प्रदेश का दूसरा प्रमुख शहर कानपुर भी ऐसे ही खतरे की जद में है। जल्दी ही हम पंचगंगा फाऊण्डेशन के जरिए औद्योगिक नगरी कानपुर का भी ऐसा ही अध्ययन करने वाले हैं।

क्या हैं खतरे?

हैजा, दस्त, अपच, मियादी बुखार, आंत या पेट की भारी जलन, संक्रामक हेपेटाइटिस, परजीवी संक्रमण, त्वचा रोग, मूत्र संक्रमण जैसी बीमारियाँ चपेट में ले सकती हैं।

इन बीमारियों के इलाज में उपयोग होने वाली दवाएँ यहाँ अपना असर खो रही हैं।

खतरनाक कीटाणु एंडेमिक कैरियर के रूप में मौजूद हैं, जो किसी भी समय रौद्र रूप दिखा सकते हैं।

स्वतंत्र प्रयोगशालाओं में की गई मौजूदा जांच से साफ है कि यहाँ गंगा में प्रदूषण कम होने का दावा बिल्कुल गलत है। यहाँ पाये गये ये ऐसे खतरनाक जीवाणु हैं, जिसकी वजह से लोगों को नए-नए रोग हो रहे हैं। मौजूदा दवाएं निष्प्रभावी हो रही हैं। खतरनाक कीटाणु यहाँ एंडेमिक कैरियर के रूप में मौज़ूद हैं और किसी भी समय अपना रौद्र रूप दिखा सकते हैं। मगर हमारे पास इनकी मौजूदगी को लेकर भी कोई प्रमाणिक आकलन मौजूद नहीं है। इन बैक्टीरिया पर अधिकांश दवाएं निष्प्रभावी हो रही हैं। यही कारण है कि आमतौर पर जिस संक्रमण के लिए एमोक्सीसीलिन और सिप्रोफोक्सासिन जैसे एंटीबायटिक का इस्तेमाल किया जाता है, वहीं वाराणसी में डोरीपेनम और पीपरासिलीन जैसे हाई एंटी बायटिक भी असरहीन साबित हो रहे हैं। यहाँ टायफायड के सामान्य केसों में भी इनकी डबल डोज दी जाती है। यानी जो काम 5 रुपये की गोली से होना चाहिए था, वह 200-250 रुपये के इंजेक्शन से हो रहा है।

मौजूदा अध्ययन सिर्फ वाराणसी के 18 घाटों पर किया गया है। अब पूरे गंगा तट पर ऐसे अध्ययन की जरूरत है। भूजल की गुणवत्ता निगरानी और जल जनित रोगों के प्रबन्धन और पूर्व चेतावनी का प्रभावी तंत्र तभी विकसित किया जा सकता है, जब इस तरह का व्यापक अध्ययन पूरे गंगा तट पर किया जाए। साथ ही बैक्टीरिया के दवा प्रतिरोधी क्षमता के आकलन में भी यह जरूरी है। तभी हम यह तय कर सकेंगे कि इन इलाकों में महामारी जैसी स्थिति बनने पर क्या कदम उठाए जा सकते हैं।

(लेखक ने गंगा तट पर प्रदूषण का वैज्ञानिक अध्ययन किया है।)

आचार्य दयानन्दकृत वेदभाष्य की विशेषताएँ

– पंडित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की विशेषताओं को अति संक्षेप में हम यहाँ दर्शाते हैं, पाठक विशेष तो उनके भाष्य को पढ़कर स्वयं देखें।

(1) ईश्वर में पूर्ण विश्वासी, पूर्ण योगाभ्यासी साक्षात्कृतधर्मा तपस्वी, पक्षपात रहित-ईश्वर के सच्चिदानन्द सर्वत्र सृष्टिकर्ता आदि गुणों के प्रतिपादक, प्राचीन ऋषि मुनियों में पूर्ण निष्ठावान, ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त ऋषियों के सिद्धान्तों को मानने वाले महापुरुष, आचार्य दयानन्द सरस्वती द्वारा इस भाष्य का निर्माण हुआ (जितना भी वह प्राप्त है)।

(2) विकासवाद के सिद्धान्त का खण्डन जहाँ ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से होता है, वैसा ही उनके वेदभाष्य से भी पदे पदे होता है।

(3) वेद अपौरुषेय (ईश्वरीय ज्ञान) वाद की धारणा पर यह भाष्य है, इसके विरुद्ध इसमें यत्किंचित भी नहीं मिलेगा।

(4) यास्क पाणिनि पतंजलि तथा उनसे भी पूर्ववर्ती ऋषि मुनि आचार्यों के आधार पर वेद के शब्दों को लौकिक शब्दों से भिन्न मानकर भाष्य किया गया है।

(5) वेद के सब शब्दों को धातुज मानकर उनकी व्युत्पत्ति निर्वचन साधार सप्रमाण दर्शाया गया है, निर्वचन भेद से वैदिक शब्दों के अर्थ इस भाष्य में भिन्न-भिन्न दर्शाये गये हैं, यौगिक और योगरूढ़िवाद इस भाष्य की आधारशिला है।

(6) सब मंत्रों के अर्थ (सायणाचार्य से भी 900 वर्ष पूर्व) त्रिविधप्रक्रिया अर्थात् सब मंत्रों के अर्थ आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधियाज्ञिक प्रक्रियाओं में होते हैं, इस सिद्धान्त के प्रसिद्ध आधार पर किए गए हैं।

(7) वेद मंत्रों के अर्थ वेदमंत्रों के आधार पर भी किए गए हैं। (यथा य. 1/13)

(8) अग्नि-वायु-इन्द्र-मित्र-वरुण-यम-रुद्र आदि शब्द केवल भौतिक अग्नि-वायु आदि के ही बोधक वाचक नहीं, अपितु 'अग्नि' शब्द के निर्बचन के आधार पर आध्यात्मिक आधिदैविक प्रक्रिया में परमेश्वर, विद्वान् राजा सभाध्यक्ष नेता, विद्युत, प्रकाश तथा जाठराग्नि आदि के भी ग्राहक हैं। अग्नि-वायु आदि शब्द जहाँ भौतिक पदार्थों के वाचक हैं, वहाँ मुख्यवृत्ति (अभिधावृत्ति) से ईश्वर के वाची हैं, यह प्रक्रिया सम्पूर्ण भाष्य में मिलेगी। इसी को आधार मानकर स्वर्गीय महात्मा श्री अरविन्द ने दयानन्द भाष्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की, और इसी बात के आधार पर वेद सम्बन्ध में गंभीर विवेचनाएं कीं।

(9) सब वेद मंत्रों के षड्जादि स्वर लिखे, जो किसी भाष्य में भी नहीं मिलते। काव्य के अंगभूत श्लेषादि अलंकारों का उपयोग इस वैदिक भाष्य में सर्वप्रथम आचार्य दयानन्द ने ही किया है, और इन अलंकारों के द्वारा अर्थों में बहुविध वैचित्र्य दर्शाया गया है।

(10) वेद में अनित्य इतिहास (व्यक्तिविशेषों का इतिहास) कहीं नहीं माना, अपितु ऐसे स्थलों पर बड़ी सुन्दर सप्रमाण व्याख्या की गई है।

(11) पदपाठ के विषय में महाभाष्यकार पतंजलि मुनि के सिद्धान्त कि - **न लक्षणेन पदकारा अनुवर्त्याः पदकारैर्नाम लक्षणमनुवर्त्त्यम्** (महाभाष्य) के आधार पर तथा आचार्य स्कन्द स्वामी के समान **'तस्मादवग्रहोऽनवग्रहः'** के अनुसार ऋषि दयानन्द ने कई स्थलों पर भिन्न पदपाठ माना है, जो शास्त्रसम्मत है।

(12) स्वामी दयानन्द सरस्वती के भाष्य से **'बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिवेदे** (वै. 6/1/1) अर्थात् वेद में कोई बात तर्क के विरुद्ध नहीं' इस सिद्धान्त के आधार पर वेदार्थ किया गया है।

(13) देवतावाद के विषय में सर्वानुक्रमणी और वृहद्देवता आदि से भिन्न भी मंत्रों के देवता माने जा सकते है।, यह सिद्धान्त शास्त्रसम्मत है, इस विचारधारा के अनुसार स्वामी दयानन्द सरस्वती का भाष्य देखना चाहिए।

(14) मंत्रों के छन्द भी अनुक्रमणी में कहे छन्दों से कहीं-कहीं सप्रमाण होने से भिन्न माने हैं।

(15) **'व्यत्ययो बहुलम्'** का सिद्धान्त वेदार्थ में परमावश्यक है। यह बात आचार्य दयानन्द के भाष्य में ही सबसे उत्तम रीति से मिलेगी।

(16) **'वाक्यं हि वक्तुरधीनं'** के अनुसार वेदार्थ इस भाष्य में मिलेगा।

(17) 'यज्ञ' शब्द से आचार्य दयानन्द ने त्रिविध यज्ञ का ग्रहण किया है। जहाँ पर श्री सायणाचार्य ने केवल भौतिक यज्ञ परक ही माना है, इतने से ही वेदार्थ कहीं का कहीं पहुँचा दिखाई देने लगता है।

(18) वेद सर्वतंत्र - सार्वभौमिक सिद्धान्तों का प्रतिपादक है, यह बात इसी भाष्य के वेदार्थ से मिलेगी।

(19) दयानन्द भाष्य में नैरुक्त शैली के आधार पर अनेक शब्दों के निर्वचन मिलते हैं, जिनके निर्वचन निरुक्त और ब्राह्मणादि ग्रन्थों में भी उपलब्ध नहीं होते, जो सप्रमाण हैं।

सबसे बड़ी और अन्तिम विशेषता दयानन्द भाष्य की यह है कि उसमें नैरुक्तशैली के अनुसार संस्कृत पदार्थ मंत्रगत पदों के क्रम में रखा गया है। और उसमें यत्र-तत्र मंत्रों के तीनों प्रकार के अर्थों को लक्ष्य में रखकर निर्वचन तथा अर्थ दर्शाया गया है, जो अन्वय में नहीं हो सकता था। अन्वय को संस्कृतपदार्थ का एक अंश समझना चाहिए और इस संस्कृत अन्वय का ही भाषार्थ किया गया है, जो भाषार्थ करने वालों से ठीक-ठीक पूरा हो भी नहीं सका। इस भाष्य की इस विशेषता को न समझकर बहुत से सज्जन घबराने लगते हैं। एक बार इसका प्रकार समझ लेने से कोई कठिनाई नहीं रहती। यह बात बहुत ही आवश्यक है।

जितना भी कोई विद्वान् विद्या के भिन्न-भिन्न अंगों का ज्ञाता, तथा योगादि दिव्यशक्ति सम्पन्न होगा, उतना ही उसे वेदार्थ का भान अधिक उत्तम रीति से होगा।

यह बात हम अपने शब्दों में न रखकर नैरुक्त आचार्य दुर्ग के शब्दों में रखते हैं। उनका वचन निम्न प्रकार है :-

'नह्येतेष्वर्थस्येयत्तावधारणमस्ति। महार्था ह्येयते दुष्परिज्ञानाश्च..... एवमेते वक्तृवैशिष्यात् साधून् साधुतरांश्चार्थान् स्रवन्ति।'

अर्थात् 'इन वेद के शब्दों' में इयत्ता (सीमा की समाप्ति) नहीं क्योंकि ये शब्द महान् अर्थों वाले हैं और इनका परिज्ञान सहज नहीं..... इस प्रकार से वैदिक शब्द वक्ता के योग्य योग्यतर और योग्यतम होने पर साधारण, मध्यम और उत्तम कोटि के अर्थों का प्रतिपादन करते हैं।

हम समझते हैं वेदार्थ विषय का यह सिद्धान्त सर्वोपरि सिद्धान्त है और अत्यन्त उपादेय है।

''वेदार्थ प्रक्रिया के मूलभूत सिद्धान्त'' से सत्यार्थ सौरभ पत्रिका से साभार

thearyasamaj.org

मूर्ति पूजा : मूल में भूल

–डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान

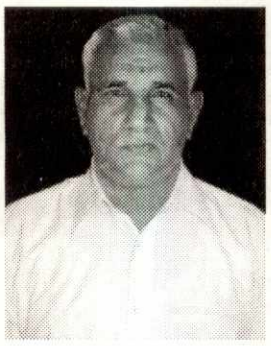

विश्व की प्राचीनतम निधि वेद है जो पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् मनुष्य जीवन के चार प्रमुख अध्यायों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की व्याख्या करती है, मानव जीवन को संस्कारित करती है, उसे मननशील मानव बनाती है जिससे वह संसार में रहने योग्य बन सके। यह अनेक स्तरों पर सदियों से सिद्ध भी होता रहा है। अत इसमें रत्तीभर भी अतिशयोक्ति नहीं है। इस निधि के नाते ही भारत विश्व गुरु कहलाया इस गहन सत्य व तथ्य से भी इंकार नहीं किया जा सकता। इसी कारण धर्म का मूल वेद को माना गया है। उसे ईश्वरीय रचना माना गया है क्योंकि मुक्ति के निकट पहुंचे चार ऋषियों के मुख से नई मानव सृष्टि के समय ये प्रकट हुए थे। वेद स्वत: प्रमाण हैं अर्थात् वेद में कही हर बात अपने आप में प्रमाण है और उन बातों पर आक्षेप नहीं लगाये जा सकते, सन्देह नहीं उठाये जा सकते, उन्हें अस्वीकारा नहीं जा सकता। मूल वेद संहिताओं (ऋग्, यजु., साम, अथर्व.) के अतिरिक्त जो साहित्य वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत आता है उनमें चार ब्राह्मण (ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ), दस उपनिषदों (ईश, केन, कठ, ऐतरेय, तैत्तिरीय, प्रश्न, मुण्डक, मांडूक्य, छान्दोगय और वृहदारण्यक), छ: वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष), छ: दर्शन अर्थात् उपांग (पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा अर्थात् वेदांत, वैशेषिक, न्याय, योग और सांख्य), चार उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद और अर्थवेद), मनुस्मृति और चार गृह्य सूत्र (गोभिल, शौनक, आश्वलायन और पाराशर के सूत्र) सम्मिलित हैं। चार वेदों के अतिरिक्त ये जो साहित्य है यह वेद भाष्य और व्याख्या में सहायक है लेकिन इसकी प्रामाणिकता सत्यासत्य के निर्णय में वहीं तक है, जहाँ तक ये मूल वेद-संहिताओं के विरुद्ध नहीं हैं अर्थात् ये स्वत: प्रमाण नहीं हैं। अपनी बात सिद्ध करने के लिए इन्हें वेदों पर निर्भर रहना पड़ता है। भारतीय परम्परा के अनुसार एक अरब छियानवें करोड़, आठ लाख, तिरपन हजार, एक सौ पन्द्रह वर्ष वेदोत्पत्ति के हो चुके हैं। महाभारत (पांच हजार वर्ष पूर्व) से एक हजार वर्ष पूर्व तक यह वैदिक सभ्यता समूचे भूमण्डल में व्याप्त रही। तत्पश्चात् अविद्या, अज्ञान, अभाव, स्वार्थ, अहंकार के कारण वेद विरुद्ध मान्यताएं जन्म लेने लगीं, विभिन्न मतमतान्तर, सम्प्रदाय, पंथ, मजहब जन्म लेने लगे और वेद उपेक्षित, गौण, विलुप्त, अमान्य होने लगे। भारत में आदि गुरु शंकराचार्य को अपने समय में बहत्तर सम्प्रदायों का सामुख्य करना पड़ा था। उन्होंने वेदांत, उपनिषद् और गीता को शास्त्रार्थ का आधार बना कर इन सम्प्रदायों का खण्डन किया न कि वेदों को आधार मानकर। यदि उन्होंने वेदों को आधार बनाया होता तो त्रैतवाद (ईश्वर, जीव, प्रकृति) को अपनाते और इससे अवतारवाद, अनेकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, श्राद्ध, तर्पण आदि धार्मिक आडम्बरों का स्वत: ही खण्डन हो जाता, इन्हें पोषण और बल प्राप्त नहीं होता। इस अभाव की पूर्ति उन्नीसवीं शताब्दी के महान् वेदज्ञ स्वामी दयानन्द सरस्वती के माध्यम से हुई और उन्होंने समूचे धार्मिक जगत् का परिशोधन और पुनरुद्धार करने का बीड़ा उठाया। उनका संकल्प उत्तम था, उनका प्रयास सराहनीय था, उनकी नियति, नीयत और नीति शुद्ध थी लेकिन अपनी पृथक सत्ता की असक्ति, अपने आधिपत्य के अहंकार, अपनी छवि के व्यामोह और रीजीजनों ने उनकी बात न केवल अनसुनी की, बल्कि नकार भी दी। इतना ही नहीं इन भयभीत साम्प्रदायिकों ने देव दयानन्द को उपेक्षित, अनादृत, व्यथित करने के साथ-साथ उनकी हत्या के भी अनेक घृणित षड्यन्त्र रचे और अन्तत: इसी एक षड्यन्त्र का शिकार होकर उन्हें मृत्यु का ग्रास बनना पड़ा। स्वामी दयानन्द और उनके आर्य समाज ने वैदिक साहित्य, वेद प्रचार, शास्त्रार्थ, गोष्ठी आदि के माध्यम से धर्म के यथार्थ स्वरूप का दिग्दर्शन कराया। इस प्रयास में आर्य समाज की अनेक विभूतियों को दयानन्द की तरह अपने प्राणों का बलिदान भी करना पड़ा। यह एक विस्तृत इतिहास है कि दयानन्द और आर्य समाज के विद्वानों ने सनातन धर्म, जैन धर्म, इस्लाम और ईसाइयत आदि से लोहा लेकर उसे बार-बार पछाड़ा, धराशायी किया और मैदान छोड़ने पर बाध्य किया।

साम्प्रदायिक संकीर्णता, उन्माद, हठधर्मी, पूर्वाग्रहों, मठवादी मानसिकता, और सम्प्रदाय जन्य व्यावसायिकता, जातीयता, साम्प्रदायिकता, राजनैतिकता और भाषावाद का यही तकाजा रहा है कि जैसे भी हो अपने पक्ष को सही माना जाये, अपना अस्तित्व बचाया जाये, अपना प्रभाव अक्षुण्ण बनाये रखा जाये भले ही इसके लिए असत्य का, कुतर्क का, गाली-गलौज का, षड्यन्त्रों का, विदेशी धन व अन्य संसाधनों का सहारा भी क्यों न लेना पड़े। ईश्वर, परमात्मा, प्रकृति ये तीन अनादि सत्ता या पदार्थ हैं जो न जन्म लेते हैं, न खत्म होते हैं। इनके बारे में जो मतभेद हैं वे ही नित नये सम्प्रदायों को जन्म देते रहे हैं। इस त्रैतवाद पर यदि वेदों की मान्यता स्वीकारा कर ली जाये तो सम्प्रदायवाद स्वत: ही नष्ट हो जायेगा। लेकिन यह सम्भव इस कारण नहीं क्योंकि अब सम्प्रदाय केवल आस्तिकता या नास्तिकता का आधार नहीं रह गये हैं बल्कि इनकी आड़ में अनेक ध्रुवीकरण, जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है, जुटाये जाने लगे हैं। ये ध्रुवीकरण इन सम्प्रदायों की शक्ति नहीं कमजोरी है। शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, तर्क, तुलनात्मक अध्ययन, प्राचीनतम साहित्य के प्रति लौटता विश्वास, परम्परा, इतिहास का सम्यक अध्ययन, मानवता के प्रति दायित्व इन क्षेत्रों में ज्यों-ज्यों विकास होगा, नये-नये आयाम स्थापित होंगे त्यों-त्यों ये कमजोरी अपने प्रखर रूप में बेपर्दा होती जायेगी और इन सम्प्रदायों की निस्सारता, अनुपयोगिता, व्यर्थता स्वत: ही स्पष्ट होने लगेगी। इसी से घबरा कर आस्था, श्रद्धा और विश्वास को आज जिस रूप में परिभाषित किया जाने लगा है, उसे लेकर जो हंगामा, उत्पात, बहस, मुकदमेबाजी होने लगी है उस पर भी अंकुश लगाने की जरूरत है अन्यथा उस अंधविश्वास, पाखण्ड, आडम्बर और मिथ्याचारों की जड़ों को उखाड़ फेंकना सम्भव न होगा जिनका धर्म से दूर का भी वास्ता नहीं है।

मूर्तिपूजा इस लेख का प्रतिपाद्य है। मूल विषय पर आने से पूर्व वैदिक त्रैतवाद को समझना आवश्यक है। कारण, इसे समझे बिना मूर्तिपूजा के आधार सूत्रों पर विचार करना सम्भव ही नहीं है। हर बात को आस्था, श्रद्धा, विश्वास का विषय बनाकर हम मैदान छोड़ कर नहीं भाग सकते और न ही आलोचना का सामुख्य कर सकते हैं। किसी भी बात को सिद्ध करने के लिए हमें इतिहास, परम्परा, तर्क, विज्ञान, उपयोगिता और औचित्य पर दृष्टिपात करना ही होगा। वैदिक वाङ्मय में त्रैतवाद में तीन अनादि पदार्थों अर्थात् ईश्वर, जीव और प्रकृति पर सम्यक चिन्तन हुआ है, इनका परस्पर क्या सम्बन्ध है इस पर गहन चिन्तन होता रहा है। यह विषय इस कारण महत्त्वपूर्ण है क्योंकि धर्म, अध्यात्म, योग इसी पर अवलम्बित है। पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का चिन्तन इस पर ही आधारित है। कर्मफल और पुनर्जन्म की व्याख्या इसके बिना नहीं हो सकती। त्रैतवाद का मूल सूत्र ऋग्वेद के प्रथम मंडल के सूक्त 164, मन्त्र 20 में इस प्रकार है :-

ओ३म् द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।

तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीत॥

इस वेद मन्त्र में बतलाया गया है कि एक वृक्ष पर दो सखा पक्षी रहते हैं। उनमें से एक पक्षी वृक्ष के पके फलों को स्वादुपन से खाता है लेकिन दूसरा पक्षी फल नहीं खाता बल्कि द्रष्टा होकर सब ओर से देखता रहता है। इस मन्त्र में रूपक अलंकार है जिसका भाव है कि फल खाने वाला पक्षी आत्मा है, द्रष्टा रूप से देखने वाला पक्षी परमात्मा है और वृक्ष प्रकृति का द्योतक है। इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि ईश्वर, जीवन और प्रकृति ये तीन पदार्थ अनादि और नित्य हैं। इनमें ईश्वर चेतन, सर्वज्ञ, अनन्त है, आत्मा चेतन और अल्पज्ञ है तथा प्रकृति जो संसार का उपादान कारण है वह अत्यंत सूक्ष्म परमाणुओं की सत्, रज्, तम इन तीन गुणों की साम्यवस्था का नाम है। वैसे भी त्रैतवाद सर्वत्र दिखाई देता है। जैसे डॉक्टर का काम रोगी और दवाओं के बिना नहीं चल सकता और किसी भी दुकानदार का काम ग्राहक और सामान के बिना नहीं हो सकता। ब्रह्माण्ड में जगत् नियंता की भूमिका में परमात्मा है, भोक्ता की भूमिका में आत्मा है और उपादान अर्थात् भोग्य सामग्री की भूमिका में प्रकृति है। इन तीनों के बिना कोई काम सम्भव नहीं है।

ईश्वर का स्वरूप

वैदिक वाङ्मय में ईश्वर का जो स्वरूप व्याख्यात है उसके अनुसार जो जगत् की उत्पत्ति करता है, उसका पालन और विनाश करता है तथा सब जीवों को पाप-पुण्य के फल देता है वह ईश्वर है। ***स पर्यगाच्छुक्रमकायम्। न तस्य प्रतिमा अस्ति। (यजुर्वेद 32/3 या 40/8)*** के अनुसार परमेश्वर निराकार ही है साकार नहीं अर्थात् न तो वह अवतार लेता है और न ही उसकी कोई आकृति, रंग-रूप, मूर्ति-फोटो, शक्ल-सूरत है। **तत्र निरतिशयं सर्वज्ञ बीजम्** (योग दर्शन 1/25) और **य: सर्वज्ञ: सर्ववित** (मुण्डकोपनिषद् 1/1/8) के अनुसार ईश्वर सर्वज्ञ है, सम्पूर्ण ज्ञान का भण्डार है, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के मनुष्यों व जीव-जन्तुओं की भाषा-बोलियों को वह जानता है। **ओ३म् ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किच्च जगत्यां जगत्** (यजु. 40/1) के अनुसार ईश्वर सर्वव्यापक है, स्थान विशेष में निबद्ध नहीं है अर्थात् चौथे आसमान सातवें आसमान, बैकुण्ठ, क्षीरसागर, गोलोक, तीर्थ या मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारे विशेष में ही नहीं रहता बल्कि सूक्ष्म से सूक्ष्म परमाणु, आत्मा, स्थूल से स्थूल पदार्थों पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र लोकादि में सर्वत्र व्यापक है। **ईश्वर सर्वभूतानांहृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति** (गीता 18/61) कृष्ण भी अर्जुन से यही कहते हैं कि ईश्वर सभी प्राणियों के हृदय में स्थित है। तदूरे तद्वन्तिके। तदन्तरस्य सर्वस्य तदुसर्वस्यास्य वाह्यत: (यजु. 40/5) ईश्वर दूर है। वह सचमुच समीप है। वह भीतर है, वह सचमुच समस्त संसार के बाहर है। मूर्खों के अनुसार ईश्वर आत्मा से दूर है जबकि योगी उसे अपनी आत्मा में ढूंढ़ता है। उपासना का अर्थ है निकट बैठना अत: यह बैठना आत्मा में ही सम्भव है। परमात्मा की सर्वव्यापकता का उल्लेख अनेक वेद मन्त्रों (ऋग्वेद 1/35/2 आदि) में किया गया है। विस्तारभय से यहां देना सम्भव नहीं है। योग दर्शन 1/24 में स्पष्ट लिखा है क्लेश-कर्म-विपाकाशयैरपरामृष्ट: पुरुष विशेष ईश्वर: अर्थात् क्लेश (अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश), कर्म (पुण्य, पाप, पुण्य व पापामिश्रित तथा पुण्य पाप से रहित कर्म), विपाक (कर्म का फल) और आशय (कर्म संस्कारों के समुदाय) इन चारों से जो अछूता है, जो समस्त पुरुषों से जीवन से उत्तम है वही ईश्वर है। इस सूत्र से अवतारवाद का खण्डन होता है क्योंकि अवतार शरीरधारी होते हैं और शरीरधारी इन क्लेशादि से रहित नहीं हो सकता। नवीन वेदान्ती तो ईश्वर और जीव को एक ही मानते हैं, इस धारण का भी इस सूत्र से खण्डन हो रहा है। वेदान्त दर्शन (3/2/23) के अनुसार **तदव्यक्तमाह हि ईश्वर** अव्यक्त है, इन्द्रियों से ग्राह्य नहीं है अत: मूर्तिपूजा निरर्थक है क्योंकि मूर्ति को आँख से निहारा जाता है, हाथ से स्पर्श कर उसकी साज-सज्जा, सेवा, आरती की जाती है। कठोपनिषद् (2/3/12) भी इसी सत्य का उद्घाटन करती है **नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न चक्षुणा** अर्थात् परमात्मा को वाणी, मन व नेत्रों से प्राप्त नहीं किया जा सकता। मूर्तिपूजा में यही सब मूर्खता दृष्टिगोचर होती है। सच्ची स्तुति, प्रार्थन, उपासना तो निराकार परमात्मा की ही तप, स्वाध्याय, ईश्वर शरणागति से सम्भव है मूर्तिपूजा, तीर्थाटन से नहीं। ईश्वर सत्, चित्, आनन्द स्वरूप, नित्य, निरंजन, अभौतिक, अजन्मा, सर्वव्यापक, नित्य, शुद्ध, बुद्ध मुक्त स्वभाव इत्यादि अनन्त गुणों का पुंज है। उसके असंख्य गुण, कर्म, स्वभाव हैं जिनके आधार पर उसके अनेक नाम ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि हैं। चूंकि कहा भी गया है एकं सद विप्रा बहुदा वदन्ति अर्थात् वह एक है, विद्वत्जन उसे भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं। वह एक है अनेक नहीं है अत: बहुदेववाद और अनेकेश्वरवाद की जो कल्पना कर ली गई है अथवा अवतारवाद की अवधारणा की गई है वह कतई अवैदिक है, मिथ्या है, अप्रामाणिक और शास्त्र-विरुद्ध है। वेद कहता है –

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

– ऋग्वेद 1.35.2

अर्थात्- सविता = वह जगत् उत्पादक, देव = प्रकाश स्वरूप परमेश्वर आ कृष्णेन = अपनी आकर्षण शक्ति से रजसा = सूर्य, पृथ्वी तथा अन्य लोक-लोकान्तरों के साथ अपनी सर्वव्यापकता से वर्तमान = वर्तमान हो रहा है निवेशयन् = वह प्रविष्ट होता हुआ अमृतम् = मरण रहित जीवात्मा तथा मर्त्यम् = विनाशशील अर्थात् परिवर्तनशील प्रकृति को अपनी व्याप्ति से थामे हुए हैं। वह विधाता मानो कि हिरण्ययेन रथेन = अपने यशोमयी रथ पर आरूढ़ होकर भुवनानि = सब लोक-लोकान्तरों को पश्चन् = देखता हुआ आयाति = विराजमान हो रहा है।

ऐसे सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, अलौकिक, विलक्षण प्रतिभा वाले ईश्वर को जो समूचे ब्रह्माण्ड की रचना, पोषण, संहार में सशक्त है, जो कण-कण में व्याप्त है उसे भला अवतार लेने की क्या आवश्यकता हो सकती है?वह हमारे समस्त शुभाशुभ को यथावत् जानता है, कर्मानुसार सभी को फल देने की व्यवस्था करता है तो फिर उसे अवतार लेने की क्या आवश्यकता है?राम और कृष्ण जिस परमात्मा की आराधना करते रहे, उस परमात्मा को भुलाकर राम और कृष्ण को अवतार मान लेना, उनके मन्दिर बना, उनकी मूर्तिपूजा शुरू करना कितना उचित व सार्थक है?फिर यह भी विचारणीय है कि ये सभी चौबीस अवतार केवल भारत में ही, केवल हिन्दुओं में ही क्यों पैदा हुए?क्या सारा अन्याय, अधर्म, अनाचरण, अत्याचार देवभूमि भारत में हो रहा था?जब प्रहलाद को बिना अवतार लिये वह अपार कष्टों से बचाता रहा, बिना अवतार लिये होलिका को आग में जलाकर खाक कर दिया तो हिरण्यकश्यप को मारने के लिए उसे नृसिंह का अवतार क्यों धारण करना पड़ा?आज प्रतिदिन हजारों आदमी अचानक ही हाई अटैक और ब्रेन हैमरेज का शिकार होकर मर जाते हैं तो हिरण्याकश्यप को बिना अवतार लिए मारना परमात्मा के लिए क्या कठिन था?फिर इन अवतारों का, अंशावतारों का उल्लेख केवल पुराणों में क्यों है जिनकी रचना महाभारत के बाद हुई है?वेदों में, उपनिषदों में, दर्शनों में, ब्राह्मणों में, स्मृतियों में इनका उल्लेख क्यों नहीं है?

पौराणिक साहित्य के मुख्य केन्द्र गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित योग-दर्शन पुस्तक मेरे सामने है जिसका भाष्य श्री हरिकृष्णदास गोयन्दका ने किया है। इस पुस्तक के 'निवेदन' में श्वेताश्वतरोपनिषद् (2/15) को उद्धृत करते हुए परमात्मा को अजन्मा, निश्चल, समस्त तत्वों से विशुद्ध बतलाते हुए कहा गया है कि –

"कोई भी सच्चा सम्बन्ध सजातीय तत्व से ही हो सकता है, विजातीय से नहीं। ईश्वर का सजातीय तत्व आत्मा ही है, अत: उसी से उसका प्रत्यक्ष अनुभव हो सकता है, अन्य जड़ तत्त्वों से नहीं।"

शेष अगले अंक में

thearyasamaj.org

भ्रष्टाचार व गरीबी उन्मूलन का हो एकजुट प्रयास : स्वामी अग्निवेश

सहरसा, जासं : अंतरराष्ट्रीय आर्य समाज के पूर्व प्रधान एवं बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश ने कहा कि भ्रष्टाचार एवं गरीबी उन्मूलन के लिए समाज को एकजुट प्रयास करने की जरुरत है। समाज की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक दशा पर चिंतन का वक्त आ गया है।

वे रविवार 17 अगस्त को विवाह भवन में सर्वोदय समाज, आर्यसमाज और बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ताओं के दो दिवसीय संगोष्ठी को मुख्य वक्ता के रुप में संबोधित कर रहे थे। स्वामी जी ने कहा कि जातिवाद, लिंगभेद, कन्या भ्रूणहत्या, धार्मिक अंधविश्वास, सांप्रदायिकता एवं धर्म के नाम पर हिंसा, नशीली दवाओं व नशे की बढ़ रही प्रवृति आने वाले तूफान की दस्तक दे रही है। अगर अभी नहीं संभले तो काफी देर हो जायेगी।

गांधीवादी चिंतक पूर्व सांसद डॉ. रामजी सिंह ने कहा कि मनुष्य की एकता के लिए सत्य, प्रेम, करुणा और न्याय के साथ भूदान की समस्याओं पर सभी सामाजिक कार्यकर्ताओं को चिंतनशील होना होगा।

बिहार सर्वोदय मंडल के उपाध्यक्ष त्रिभुवन नारायण सिंह की अध्यक्षता व पंचमभाई के संचालन में हुई इस संगोष्ठी में बाल व्यापार, शराबनोशी, पर्यावरण संकट व भूदान की समस्या पर चर्चा हुई। मौके पर संयोजक दल के सदस्य भवतोष घोष, श्यामनारायण यादव, सूर्यनारायण भारती, दीपक कुमार सिंह, प्रवीण कुमार सिंह, अनिल गुप्ता, सरयु प्रसाद यादव, कमल प्रसाद साह, दिनेश यादव, सरस्वती देवी, नीलम प्रकाश, लक्ष्मेश्वर चौधरी, कैलाश यादव, ब्रह्मदेव चौधरी आदि मौजूद रहे।

साभार–दैनिक जागरण

शाकाहार के पक्ष में वैज्ञानिक तथ्य

– रामनिवास लखोटिया

आज भारतीय समाज में राष्ट्रीय स्वाभिमान के क्षरण के फलस्वरूप सामिष भोजन की बढ़ती हुई प्रवृत्ति एक शोध का विषय है। शराब, धूम्रपान, अफीम, गांजा, गुटखा और विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्यों के बढ़ती सेवन की प्रवृत्ति भी समाज के सभी वर्गों के लोगों में दृष्टिगोचर हो रही है। शहरों में पश्चिमी फैशन से प्रभावित परिवारों के युवक एवं युवतियों और उभरते हुए बालकों में भी जहाँ एक ओर नशे की प्रवृत्ति बढ़ रही है, वहीं अंडा या चिकन सूप या अन्य सामिष भोजन का होटलों या रेस्टोरेंटों में ऐसे शाकाहारी परिवारों के सदस्य सेवन कर रहे हैं, जिनके घरों में प्याज और लहसुन भी नहीं आता है। इसलिए और शाकाहार के पक्ष में व मदिरापान के विरोध में वैज्ञानिक तथ्यों सहित विवेचन इस लेख में करने का प्रयास किया गया है। यद्यपि इस प्रवृत्ति के बढ़ने का कारण परिवारों में राष्ट्रीय संस्कृति व स्वाभिमान के प्रति बढ़ रहा उपेक्षा का भाव भी है।

शाकाहार उत्तम आहार

यह विडंबना ही है कि जहाँ विदेशों में नैतिकता या स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के कारण जगह-जगह लोग मांसाहार से शाकाहार की ओर आ रहे हैं, वहीं फैशन के कारण कहिये या अज्ञानता के कारण, युवकों में और विशेषकर कालेज में पढ़ने वाले छात्रों में मांसाहार की प्रवृत्ति बहुत तेजी से बढ़ रही है। जहाँ एक ओर यह अध्यात्म और धर्म के विरुद्ध आचरण है, वहीं सामिष भोजन अर्थात् मांसाहार नैतिकता की दृष्टि से भी एकदम गलत है। महाभारत में स्पष्ट लिखा गया है कि जो व्यक्ति मांसाहार करता है, बेचता है, खरीदता है, या उसके क्रय-विक्रय में सहायक होता है वह भी मांसाहारी है। फिर ''जियो और जीने दो'' के नैतिक सिद्धान्त के अनुसार जब किसी जीव को हम जीवन दे नहीं सकते तो हमें अपने स्वाद या स्वार्थ के लिए उसके प्राण लेने का कोई अधिकार नहीं है। इस नैतिक सिद्धान्त के कारण ही पाश्चात्य देशों के महान मानव जैसे, सुकरात, अरस्तु, प्लेटो, रूसो, शेक्सपियर, न्यूटन, लियो आइंस्टीन, टालस्टाय, जार्ज बर्नाडशा आदि पूर्णत: शाकाहारी बन गए थे।

अण्डा भी स्वास्थ्यवर्धक नहीं

आजकल प्राय: यह सुनने में आता है कि बच्चों को अण्डे आदि के सेवन से अधिक स्वस्थ बनाया जा सकता है। यह एक भ्रांति है, जिसका निराकरण 1985 के नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. माइकल एस. ब्राउन तथा डॉ. जोसेफ, एल. गोल्डस्टीन नामक दो अमेरिकन डॉक्टरों ने किया जब उन्होंने यह साबित कर दिया कि हृदय के रोग के कारण ही अधिकांश मौतें होती हैं। उनके अनुसार कॉलस्टेरोल नामक तत्त्व को रक्त में जमने से रोकना बहुत ही आवश्यक है। और, कॉल्स्टेरोल अंडों में सबसे अधिक मात्रा में अर्थात् 100 ग्राम अण्डे में लगभग 500 मिग्रा. पाया जाता है। यह वनस्पतियों एवं फलों में नहीं के बराबर होता है। परन्तु मांस, अंडों और जानवरों से प्राप्त वसा में प्रचुर मात्रा में होता है। अब यह भी सिद्ध हो चुका है कि अंडा सुपाच्य नहीं है। बल्कि अंडे के छिलके पर लगभग 15,000 सूक्ष्म छिद्रों के द्वारा कई जीवाणु अंडे में प्रवेश कर जाते हैं जो अंडे को खराब कर देते हैं इससे हृदय रोग शुरू हो जाता है। इससे गुर्दे के रोग एवं पथरी जैसी बीमारियों को बढ़ावा मिलता है। यही कारण है कि ''इंटरनेशनल वेजिटेरियन यूनियन'' एवं शाकाहारी संस्थाओं के द्वारा शाकाहार को विदेशों में बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा रहा है।

शाकाहार पौष्टिक एवं स्वास्थ्यप्रद

प्रोटीन, कैलोरी और कार्बोहाइड्रेट आदि की दृष्टि से स्वास्थ्य के लिए शाकाहार पौष्टिक आहार है। जैसे, प्रति 100 ग्राम खाद्य दालों में 24 प्रतिशत प्रोटीन व सोयाबीन में 43 प्रतिशत प्रोटीन होता है, वहां अंडे में कुल 13 प्रतिशत व अन्य मांस व मछली में 18 में 22 प्रतिशत तक प्रोटीन होता है। विशुद्ध शाकाहारी जानवर मांसाहारी जानवरों की तुलना में अधिक शक्तिशाली हैं, जैसे घोड़ा, गेण्डा व हाथी। मांसाहार की अपेक्षा शाकाहार विभिन्न रोगों की रोकथाम में अधिक सहायक सिद्ध हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संघ ने ऐसी 160 बीमारियों के नाम अपने समाचार पत्र में घोषित किए हैं जो मांसाहार से फैलती हैं। इन बीमारियों में मिर्गी की बीमारी प्रमुख है। मानव पर सैकड़ों प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि पशुओं वाली चिकनाई से रक्त में ''कालेस्ट्रोल'' की मात्रा बढ़ जाती है और वनस्पति की चिकनाई उसे कम करती है। इस बात के लिए प्रचुर प्रमाण यह है कि ''आर्टिरियोस्कलेरोसिस'' तथा ''कोरोनरी'' हृदय रोगों में

कोलेस्ट्राल बड़ा कारण है।

मदिरापान से हानियाँ

नशा चाहे जैसा हो, वह स्वास्थ्य के लिए घातक है। विशेषकर मदिरापान की प्रवृत्ति और भी घातक है क्योंकि यह स्वभावत: मांसाहार और विषय विकार के प्रति मनुष्य को आकृष्ट करता है। कई बार कुछ व्यक्ति यह प्रश्न करते हैं कि आखिर शराब के नशे को बढ़ते हुए रोग के रूप में और एक खराब आदत के रूप में क्यों गिना जाता है?इस सम्बन्ध में कुछ विद्वानों और धर्मग्रन्थों के उद्‌गार मनन करने योग्य है। महान चिन्तक ग्लेडस्टोन के अनुसार युद्ध, अकाल और महामारी ने मिलकर मानव-जाति का इतना अहित नहीं किया, जितना अकेली शराब ने किया है। शराब के नशे की आदत से उत्पन्न आर्थिक, मानसिक, सामाजिक और पारिवारिक दुष्प्रभावों का दायरा अत्यन्त व्यापक है। शराब पीने के कुछ ही देर बाद उसमें मौजूद अल्कोहल रक्त में शामिल होकर रक्त कोशिकाओं के माध्यम से सारे शरीर में फैल जाता है। अल्कोहल से हमारा तात्पर्य ईथाइल एल्कोहल से है। परन्तु बहुधा मिलावटी शराब में अत्यधिक विषाक्त मिथाइल एल्कोहल भी पाया जाता है। भिन्न-भिन्न प्रकार की शराब में भिन्न-भिन्न प्रकार में एल्कोहल पाया जाता है। जैसे देशी शराब में 35 से 50 प्रतिशत, बियर में 4 से 8 प्रतिशत या 10 प्रतिशत, स्प्रिट में 40 से 50 प्रतिशत, वाइन में 8 से 15 प्रतिशत यह पाया जाता है। केन्द्रीय स्नायुतंत्र शराब के प्रभाव से कुन्द (डिप्रेस्ड) हो जाता है। स्नायु तंत्र के उच्च केन्द्रों पर रोक लगने पर मनुष्य कुछ समय के लिए उत्साह का अनुभव करता है। जिससे वह आसानी से क्रोधित हो जाता है, बेवजह हंसता है तथा बातें करता है और उसका व्यवहार असामाजिक हो जाता है। ऐसी स्थिति में वह कोई भी अपराध कर सकता है। विटामिन ''बी'' समूहों की कमी, आंखों पर दुष्प्रभाव, हृदय गति का तीव्र होना, गैस्ट्राइटिस और अल्सर आदि का बनना, यकृत की खराबी होकर असाध्य बीमारी (सिर्होसिस आफ लीवर) होने की संभावना बढ़ना, आदि शराब के नशे के दुष्परिणाम हैं। शराब का नशा करने वाला व्यक्ति प्राय: अपच, अनिद्रा, पौरुष हीनता आदि गम्भीर रोगों का शिकार हो जाता है। धर्म शास्त्रों में इसका निषेध किया गया है। निरुक्त के अनुसार सात महापापों में शराब पीना भी सम्मिलित है (निरुक्त 6/27)। छान्दौग्योपनिषद् में यह स्पष्ट कहा गया है कि ''शराब सभी पापों का कारण है''। चरक संहिता में लिखा है – ''शराब सभी कुकर्म कराने वाला और देह को नाश करने वाला है। शराब पीने वालों के लिए कोई औषधि असर नहीं करती है।''

मदिरापान मांसाहार है

कुछ दिन पूर्व ही मैंने इंटरनेट पर डब्लू डब्लू डब्लू, विगन सोसाइटी का एक ''पोर्टल'' देखा जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि अधिसंख्य शराबों में खून, हड्डी, चर्बी, और कई प्रकार के जानवरों और कीड़ों के हिस्सों का मिश्रण होता है। इसी प्रकार कुछ किस्मों की शराब में मछली का तेल, और जिलेटिन और इंजिंगिलास मिलाये जाते हैं। इंजिंगिलास एक प्रकार का वह जिलेटिन पदार्थ है जो स्वच्छ पानी की मछलियों में और विशेषकर स्टरजन मछलियों के ब्लेडर से निकाल कर प्राप्त किया जाता है। इसी प्रकार, जानवरों की कोशिकाओं और चमड़ी और उनके अन्य शरीर के हिस्सों को उबालकर एक जेली का निर्माण होता है जिसे ''जिलेटिन'' कहते हैं। जब ये पदार्थ अधिकांश शराबों में मिलाये जाते हैं तो शराब मांसाहार ही हो जाती है। समाज के व्यक्तियों का यह कर्तव्य है कि वह स्वयं भी शराब के नशे से बचें एवं धूम्रपान, गुटखे आदि के नशे से होने वाले दुष्परिणामों से अपनी नई पीढ़ी को समझायें। दृढ़ संकल्प से ही हम इनसे बच सकते हैं।

– अध्यक्ष भारतीय शाकाहार परिषद् एस.-228, ग्रेटर कैलाश-2, नई दिल्ली

thearyasamaj.org

Why Lose Perspective?

Put the soul back into our culture, says swami acnivesh

Commitment to justice is the practical expression of ethics. Justice is in honouring the needs of all relationships. In our culture, we have reasonably well-developed family consciousness. Doing justice to one's family comes naturally to us. However, we have been traditionally weak on the social front. Our commitment to social justice is not yet fully developed. This is where our spirituality is being put to its sternest test.

Understanding religion in an escapist sense encourages us to close our eyes to avoidable suffering of people around us. Often, leaders are unconcerned about the many frontiers of systemic atrocities and injustice that have been done for ages. This is a glaring denial of spirituality in the Indian context, and it needs to be challenged by leaders of various religious who are committed to development.

The fundamental principle of religious ethics is the spirit of service. Human nature, devoid of spirituality, would make us want to be served rather than serve oth-ers. Service involves overcoming selfishness. The spirit of service is essential to create a dynamic social ethos. The role models from our scriptures uphold this ideal. It is necessary that we rethink about these values and incorporate them into our social culture.

The Fundamental Principle of Religious Ethics is the spirit of service. Human Nature, Devoid of spirituality, would make us want to be served rather than serve others.

Seen from a cosmic perspective, the most important aspect of Creation is its oneness, its coherence that lends meaning to its diversity. Our need for harmony, die sense of duty to live peacefully with all aspects of Creation and to respect its underlying integrity, arises out of diis oneness.

However, when we lose spiritual perspective, society and nature become aggregates of various constituents that exploit them at will. It does not matter then if we exploit human beings or nature as a means to attain our ends. This is the attitude that governs us today, and is a major pointer to the need for spiritual renewal. The World around us has changed a great deal and spirituality, as against ritualistic religiosity, cannot remain indifferent to it. The goal of spirituality is to empower people to cope with their life and destiny meaningfully and effectively. This makes it neessary to address corruption and in justice that prevail from time to time. The ethical task is to minimise evil and to reinforce what is good and both have to be addressed simultaneously. It is important that a religious community, as a whole, is inspired with this sense of purpose. Let's not assume that either politicians or governments can do this for us.

The spiritual renewal of our society is an urgent requirement because of the rise of an aggressive and soulless materialistic culture among us. Iwo major facets mark this new ethos. In the first place, it aggravates social and economic inequalities .This is going to push millions below the poverty line. In the future, there is likely to be a dramatic decline in the quality of life for millions of people. This is not only a question of economics or even of'good governance', it is, essentially, a spiritual issue that none can ignore.

पृष्ठ–1 का शेष

सभा प्रधान बनने पर स्वामी आर्यवेश जी का विभिन्न जिलों में स्वागत का क्रम जारी

आवाज उठाने का संकल्प लेना चाहिए। यही समय की मांग है। स्वामी जी ने आर्य समाज हापुड़ के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं का हृदय से आभार व्यक्त किया। अन्त में आर्य समाज, हापुड़ के वरिष्ठ नेता श्री आनन्द प्रकाश आर्य ने केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से पांच हजार रुपये प्रदान करते हुए आश्वासन दिया कि वे सार्वदेशिक सभा के हर कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लेंगे तथा हर प्रकार का सहयोग प्रदान करेंगे।

स्वामी आर्यवेश जी तथा पं. माया प्रकाश त्यागी जी का स्वागत करने वालों में डॉ. विकास अग्रवाल, प्रधान प्रेम प्रकाश आर्य, मंत्री श्री विजेन्द्र जी, श्री नरेन्द्र आर्य, आनन्द प्रकाश आर्य आदि मुख्य थे।

गुरुकुल धीरणवास में किया गया सम्मान

18 अगस्त को गुरुकुल धीरणवास, हिसार में जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित विशेष कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। 11 बजे से 1 बजे तक चले इस कार्यक्रम में बहन कल्याणी आर्या ने श्री कृष्ण के जीवन पर आधारित भजन गाकर सबको सम्मोहित कर दिया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी को आर्य समाजों के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनाये जाने पर क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। स्वागत करने वालों में स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती, कुलपति गुरुकुल धीरणवास, श्री इन्द्रजीत आर्य प्रधान, श्री बजरंगलाल आर्य मंत्री, बदलूराम आर्य प्रधान आर्य समाज हिसार, श्री चतर सिंह, शोभाचन्द देवराज, नन्दराम सांगवान, घनश्याम, तहसीलदार महावीर सिंह, श्रीकृष्ण सैनी, देवेन्द्र सैनी, सेठ मनीराम, मा. दिलीप सिंह, सत्यपाल अग्रवाल, दयानन्द वेनीवाल, बलजीत सिंह, सीताराम आर्य, आचार्य राजमल ढाका, नत्थू सिंह आर्य, राधेश्याम आर्य ने फूलमाला, शॉल भेंट कर स्वामी जी का सम्मान किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने गुरुकुल के लिए प्रस्तावित स्वामी सवर्दानन्द द्वार एवं गैलरी का वेद मन्त्रोच्चार के साथ शिलन्यास किया। श्री इन्द्रजीत आर्य जी ने आभार व्यक्त करते हुए आश्वासन दिया कि वेद प्रकाशन के कार्य में भरपूर सहयोग किया जायेगा।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में श्री कृष्ण के उदात्त चरित्र का दिग्दर्शन कराते हुए कहा कि श्री कृष्ण जी का जीवन सभी के लिए अनुकरणीय है महर्षि दयानन्द ने उनके बारे में कहा कि श्रीकृष्ण जी ने जीवन पर्यन्त कोई ऐसा काम नहीं किया जो निन्दनीय हो वे धर्मात्मा एवं आप्त पुरुष थे। स्वामी जी ने कहा कि श्रीकृष्ण की सच्ची भक्ति यही है कि हम उनके जीवन तथा चरित्र को याद कर स्वयं अपना जीवन उसी सांचे में ढालें तथा उनके सच्चे स्वरूप तथा उज्ज्वल चरित्र को स्मरण करते हुए उनका जन्मदिन मनायें तभी हमारा जन्माष्टमी पर्व मनाना सार्थक होगा। स्वामी जी ने कहा कि युवाओं को श्रीकृष्ण से प्रेरणा लेते हुए किसी भी संघर्ष, पाखण्ड तथा सामाजिक बुराइयों का विरोध करना चाहिए। उन्होंने आर्य समाज में युवाओं की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि युवाओं तथा महिलाओं को अधिक से अधिक संख्या में आर्य समाज का सदस्य बनायें। स्वामी जी ने वेद भाष्य प्रकाशन योजना में सहयोग की अपील करते हुए कहा कि 2100/- रुपये में वेद सैट सार्वदेशिक सभा से प्राप्त होगा आप सब लोग घर-घर में वेद पहुंचाने का संकल्प लें।

आर्य समाज नागोरी गेट हिसार में युवाओं में अभूतपूर्व उत्साह

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हिसार ने आर्य समाज नागौरी गेट में एक महत्त्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया और उसमें युवा हृदय सम्राट स्वामी आर्यवेश जी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। इस बैठक में सैकड़ों युवाओं ने उत्साहपूर्ण वातावरण में भाग लिया। सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनाये जाने की प्रसन्नता प्रकट करने के लिए सैकड़ों युवाओं ने स्वामी जी को माल्यार्पण से लाद दिया तथा शॉल और स्मृति चिन्ह भेंट कर अभूतपूर्व सम्मान व्यक्त किया। इस अवसर पर आयोजकों ने घोषणा की कि 23 नवम्बर, 2014 को रोहतक में होने वाले आर्य युवक सम्मेलन में 700 युवक निश्चित रूप से पहुँचेंगे। इस अवसर पर हिसार आर्य समाज के संरक्षक, प्रसिद्ध नेता तथा पूर्व मंत्री श्री हरिसिंह सैनी ने स्वामी जी का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए तन, मन, धन से सहयोग देने का आश्वासन दिया। उन्होंने आर्य समाज में एकता प्रयासों के लिए भी पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया। इस अवसर पर परिषद् के कार्यकारी प्रधान श्री दलबीर सिंह आर्य, देवेन्द्र सैनी प्रधान, श्री महावीर सैनी, सत्य प्रकाश आर्य, मास्टर जयवीर सोनी, हरिसिंह मास्टर रामौतार अग्रवाल, सीताराम, श्री महेन्द्र सिंह आर्य, चुन्नी लाल सोनी, सुभाष आर्य राखी गढ़ी, श्री सत्यपाल अग्रवाल ने स्वामी जी का स्वागत तथा सम्मान किया। कार्यक्रम में श्री सत्यपाल अग्रवाल तथा दलबीर सिंह ने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने युवाओं से अपील की कि उनके ऊपर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व आ गया है वे पूरे मनोयोग से आर्य समाज के कार्य के लिए आगे आयें। स्वामी जी ने कहा कि युवाओं को आगे लाने के लिए भरसक प्रयास किये जायेंगे। आर्य समाज में नया जीवन फूंकने के लिए उसको गति प्रदान करने के लिए प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम युद्ध स्तर पर प्रारम्भ किया जायेगा। उन्होंने आर्य समाजों में महिलाओं की घटती संख्या पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा आर्य समाज में महिलाओं को अधिक से अधिक संख्या में लाया जाना चाहिए तथा उन्हें सदस्य भी बनाना चाहिए। स्वामी जी ने वेद भाष्य प्रकाशन योजना में सहयोग की अपील करते हुए कहा कि बहुत कम मूल्य मात्र 2100/- रुपये में वेद प्राप्त कराये जा रहे हैं अत: घर-घर में वेद पहुंचाने का आप

सबको कार्य करना है लोगों को प्रेरित करना है कि वे अपने घरों में वेद अवश्य रखें और नित्य उसका पठन-पाठन करें।

अग्रवाल अस्पताल का उद्घाटन

प्रसिद्ध समाज सेवी श्री सत्यपाल अग्रवाल जी द्वारा प्रारम्भ किये जा रहे अग्रवाल अस्पताल का उद्घाटन स्वामी आर्यवेश जी के द्वारा सम्पन्न किया गया। स्वामी जी ने वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ मुख्य द्वार पर रीबन काट कर उद्घाटन किया। इसी भवन में सजग संस्था का उद्घाटन ब्र. दीक्षेन्द्र जी ने किया। अस्पताल के कार्यालय में उपस्थित जनों को जलपान कराया गया तथा अस्पताल के कार्यों पर प्रकाश डाला गया।

वेद प्रकाशन के लिए 11000/- रुपये की राशि भेंट की

श्री राम कुमार आर्य प्रधान वेद प्रचार मण्डल हिसार ने अपने निवास स्थान पर स्वामी जी को सादर आमन्त्रित कर वेद प्रकाशन के लिए 11000/- रुपये की राशि दान स्वरूप प्रदान की। इस अवसर पर प्रसिद्ध समाज सेवी श्री अतर सिंह स्नेही, इन्सपेक्टर निहाल सिंह जी आचार्य सन्तराम तथा ब्र. दीक्षेन्द्र भी साथ में थे। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने श्री राम कुमार आर्य जी का धन्यवाद करते हुए सार्वदेशिक सभा की भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला।

thearyasamaj.org

घोंसले उजाड़ते कंक्रीट के घरौंदे

ओखला पक्षी अभ्यारण्य आज से कोई एक दशक पहले शहर से कोसों दूर वीरान था, देसी भाषा में कहें तो जंगल था लेकिन आज बसाव के बीचोंबीच आ गया। बसाव भी ऐसा है जो कुछ बेजुबानों के घरौंदे उजाड़ने में लग गया.... जाने-अंजाने एक सदी पहले इंसान ने ही ऐसी स्थितियां बनाई थीं कि स्थिर पानी और दलदली जमीन के इर्द-गिर्द के पेड़ों में अनगिनत पक्षियों ने अपने घोंसले बना लिए। उतने ही पक्षियों के जोड़े हजारों मीलों की दूरी तय करके हर साल प्रजनन के लिए यहां प्रवास करने आ जाते हैं। आंकड़ों को देखें तो सिर्फ इसी अभ्यारण्य में ही पक्षियों की कुल 300 प्रजातियां बसती हैं जो अपने देश का ही महत्त्वपूर्ण 30 प्रतिशत हैं। 3.5 वर्ग किमी. के दायरे में फैले इस अभ्यारण्य को सरकारी मुहर तो 1990 में ही मिली पर ये पक्षियों का बसेरा एक सदी पहले से बन गया था जब यहाँ ओखला बैराज बना कारण साफ है आदमी के बसाव से दूर यहां जहां उसका दखल नहीं था। एक अभ्यारण्य के तौर पर किसी वन्य क्षेत्र के अधिसूचित होते ही उसके आसपास का 10 किमी. का दायरा भी पारिस्थितिकीय संवेदनशील क्षेत्र घोषित हो जाता है।

ऐसी परिस्थिति सिर्फ ओखला पक्षी अभ्यारण्य की ही नहीं देश में ऐसे अनेकों अभ्यारण्यों के साथ हैं क्योंकि हम अभी भी मानव बसाव से वन प्रदेश को अलग नहीं कर पाए हैं। जहां विवाद उठता है मानवीय पक्ष हावी हो जाता है। लेकिन यहां ये जानना जरूरी है कि पुश्तों से किसी इलाके में रहने वाले लोगों और नयी सुनियोजित नगर विकास योजना के बसाव में अंतर है, हम इसे रोक सकते हैं, विडंबना यह है कि वन विभाग ऐसे किसी भी तरह के निर्माण पर नजर नहीं रखता। लेकिन इस पर किसी तरह की आपत्ति कोई भी सजग

स्वार्थ हमारा है पक्षियों का नहीं, हां सिर्फ कबूतर और कौए हैं जो आज भी ढीठ बनकर जमे हुए हैं, क्या पता कल वो भी लापता हो जाएं। कोई हैरानी की बात नहीं कि वन्यसंपदा के संरक्षण में लगे महारथियों को भी इस स्थिति से पार पाने का कोई हल नहीं सूझता।

नागरिक राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण (एनजीटी) में कर सकता है मगर वक्त किसके पास है। जहाँ व्यक्तिगत लाभ के लिए राष्ट्र और उसकी संपदा के साथ खिलवाड़ किया जा सकता है। सरकारी तन्त्र ने ही राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण (एनजीटी) बनाया, मगर अब अपने आप ही उसके निर्णय को नकार रहा है।

ग्रेटर नोएडा में तथाकथित निर्माण कार्य व बसावट की क्या स्थिति है किसी से छुपी तो है नहीं?तो उन इलाकों में निर्माण की इजाजत भी कैसे मिल जाती है सोचने वाली बात है, सहज है कि बिल्डर पहले बिना किसी अनुमति के निर्माण कर लेता है उसे भरोसा रहता है कि वो बाद में नियमों में फेरबदल कर लेगा। उसे मालूम है कि सरकारी तंत्र की बांह कैसे मरोड़ी जा सकती है। यदि एनजीटी और फिर देश के सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट कर दिया है कि पारिस्थितिकीय संवेदनशील क्षेत्र का दायरा कितना होना चाहिए तो फिर विवाद किस बात का?विशेष कर ओखला पक्षी अभ्यारण्य के सन्दर्भ में अभी भी सारी बहस होनी बाकी है।

ये समझना मुश्किल है कि आज की परिस्थिति में हम पहले अपनी धरोहर को ही नहीं सहेजते और फिर उस धरोहर का संरक्षण लेकर वो सारे कर्म करते हैं कि वो बर्बाद हो जाए। जिसका ज्वलंत उदाहरण है प्रमुख महानगरों से साधारण गौरैया का लापता हो जाना, फिर हमने शुरू की वो मुहिम जिससे वे वापस आ जाएं। अपने घर की बालकनी में उसके लिए कृत्रिम घोंसले बनाए, उसके लिए दाना भी डाला मगर ये काफी न होगा। यहां पूरे एक इलाके की बात हो रही है जिसे बनाने में तो कोई मेहनत नहीं लगी मगर अगर एक बार वो मिट गया तो वापस लाना कठिन हो जायेगा।

स्वार्थ हमारा है पक्षियों का नहीं, हां सिर्फ कबूतर और कौए हैं जो आज भी ढीठ बनकर जमे हुए हैं, क्या पता कल वो भी लापता हो जाएं। कोई हैरानी की बात नहीं कि वन्यसंपदा के संरक्षण में लगे महारथियों को भी इस स्थिति से पार पाने का कोई हल नहीं सूझता।

कारण हर परिस्थिति में कभी पर्यटन तो कभी वनवासियों के नाम पर या फिर सीमांत इलाके में बसे ग्रामीणों के लिए राष्ट्रीय उद्यान के संदर्भ में कभी बफर जोन तो कभी कोर जोन ..... यहाँ ये बसाव अपने आपमें एक शहर हो जाते हैं। कभी लगता है सुशासन के लिए वनविभाग में विभाजन तो सही है पर फरियादी एक दर से दूसरे दर ठोकरें खाता रहता है। हम संवेदनशील तो दिखते हैं पर लाचार से, क्योंकि जिन्हें ये जिम्मेदारी सौंपी गयी उनकी प्राथमिकताएं दूसरी हो गयी हैं।

- पांचजन्य से साभार

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

ईश्वरीय ज्ञान चारों वेदों की ऑडियो डी.वी.डी. मनुष्य मात्र के लिये उपलब्ध

10 या इससे अधिक सैट मंगाने पर 50 प्रतिशत की विशेष छूट का लाभ उठायें

परमात्मा ने अपने ज्ञान को सभी मनुष्यों के कल्याण के लिये श्रुति रूप में दिया, जो कि लम्बे कालान्तर के पश्चात् पुनः ऑडियो डी०वी०डी० (श्रुति) रूप में प्रस्तुत किया गया हैं।

चारों वेदों के बीस हजार चार सौ अठ्ठाईस (20,428) मंत्रों को हिन्दी में अर्थ और उनके भावार्थ सहित 362 घण्टे की 8 डी०वी०डी० में डाला गया है।

मंत्रों के साथ उनके देवता, ऋषि, छन्द एवं स्वर भी दिये गये हैं। सभी मंत्रों का शुद्ध एवं सस्वर पाठ किया गया है तथा साथ ही संगीत भी दिया है। 8 डी०वी०डी० के एक सेट की सहयोग राशि 1000 रू. है। 8 डी०वी०डी० के दस या दस से अधिक सेट मंगाने पर 50 प्रतिशत की छूट के साथ 500 रू. प्रति सेट में दिया जा रहा है। डाक व्यय इसके अतिरिक्त होता है।

हमारा लक्ष्य व्यापार करना न होकर वेदों को भारतीय प्रान्तीय भाषाओं एवं विश्व के देशों की प्रमुख भाषाओं में अनुवादित करके फिर श्रुतिरूप में करोड़ों लोगों तक पहुंचाना है।

अतः इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग कीजिये और आज ही अपने लिये और दूसरों तक वेदों का ज्ञान पहुंचाने के लिये अधिक से अधिक सैट मंगाने का निम्न सम्पर्क सूत्रों पर आदेश कीजिये।

साहित्य विभाग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
फोनः 011–23274771, 23260985

सर्व धर्म संसद
7, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली–1
फोनः 011–23367943, 23363221

ईमेलः sarvadeshikarya@gmail.com

विश्वमआर्यम स्प्रिचुअल डी.वी.डी., प्रा. लि. 302, पंचशील गली नं. 1 गढ़ रोड़ मेरठ (उ. प्र.)

www.vishvamaryam.com info@vishvamaryam.com

Mob. +91-8755280038

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली में सम्पन्न हुआ वेद प्रचार सप्ताह का भव्य कार्यक्रम

आर्य समाज की गतिविधियों के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन 15 अगस्त से 18 अगस्त तक समारोह पूर्वक किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन विशेष यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम चलता रहा। समापन समारोह में स्वामी आर्यवेश जी ने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर श्रीकृष्ण के उदात्त चरित्र पर प्रकाश डाला तथा उनके जीवन से प्रेरणा लेने की अपील की। उन्होंने कहा कि श्रीकृष्ण ने हमेशा अधर्म के रास्ते पर चलने वालों का तिरस्कार किया और धर्मात्मा लोगों का साथ दिया। अर्जुन का सारथी बनकर जो उपदेश उन्होंने दिया वह गीता के रूप में विश्व प्रसिद्ध है। उन्होंने कहा कि आज भी देश में पाखण्ड, शोषण, भ्रष्टाचार, महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं आज उनसे देश को मुक्त कराना है। दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों से देश समाज को बचाना है। अतः श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर एकजुट होकर आर्य समाज के साथ मिलकर कार्य करें और महर्षि दयानन्द के मिशन को पूर्ण करें। इस अवसर पर बहन प्रवेश आर्या और पूनम आर्या ने भी अपने विचार रखें।

कुरवाई में पंच दिवसीय अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

20 से 24 जून, 2014 तक कुरवाई (विदिशा) के आर्य भवन में आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी के ब्रह्मत्व में अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ।

वेदपाठी का कार्य आर्य कन्या गुरुकुल की छात्रायें कु. मीनाक्षी एवं कु. पूजा ने किया। 5977 मंत्रों की आहुति हेतु दोनों समय यज्ञ 2-2 घंटे होता था। अंत में आचार्य जी मंत्रों के बारे में व्याख्या करते थे। प्रकारांतर से गृहस्थ की समस्याओं राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य, ईश्वर भक्ति आदि विषयों पर रोचक सूत्र जन-सामान्य को सुनने को मिल जाते थे। माईक की दिशा बस्ती में चारों ओर होने से यज्ञशाला में उपस्थित जनों के अतिरिक्त अन्य जनों को भी लाभ मिलता था। संध्या के उपरान्त शाम को गुरुकुल की बेटियाँ ईश्वर भक्ति के भजन सुनाती थी। श्री राम मुनि जी का एक स्वप्न था कि हमारे घर में चारों वेदों के मंत्रों से यज्ञ हो जावे। ईश्वर कृपा से 4 वर्षों में उनके पुत्र श्री इन्द्रप्रकाश आर्य ने अपने घर पर इस कार्य को पूरा कर लिया।

वयोवृद्ध श्री राम मुनि जी के 5 पुत्र जो मुख्यतया स्वर्ण व्यवसायी है श्री ओम प्रकाश (अधिवक्ता व पत्रकार) सूर्य प्रकाश, रविन्द्र कुमार, इन्द्रप्रकाश, मनोज कुमार सपरिवार सम्मिलित हुए तो वैदिक सिद्धान्तों पर पुस्तक की लेखिका श्रीमती गीता सोनी (सागर) सहित 5 पुत्रियाँ भी इसमें पुण्य लाभ प्राप्त करने आई थी। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद् ग्रामीण अंचल में जो सामाजिक उत्थान का कार्य करती है उसकी एक मीटिंग में समय निकाल कर आचार्य जी का प्रवचन करवाया गया। आस-पास के आर्यजनों की उपस्थिति आयोजकों का उत्साहवर्द्धन करती रही। अंतिम दिन आर्य परिवार की ओर से प्रीतिभोज का आयोजन था। इन्द्रप्रकाश आर्य जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए कृतज्ञता प्रकट की।

- मंत्री, आर्य समाज

युवा चरित्र निर्माण एवं बॉक्सिंग प्रशिक्षण शिविर बरसोला में सम्पन्न सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नव-नियुक्त प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का किया स्वागत

बरसोला, जीन्द। आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में युवा चरित्र निर्माण एवं बॉक्सिंग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन राजकीय उच्च विद्यालय, बरसोला में किया गया। सात दिन तक चले इस शिविर का समापन आज दिनांक 10 अगस्त को प्रातःकाल परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र आर्य की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आर्य समाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे।

अपने मुख्य उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि 1942 में 9 अगस्त को महात्मा गांधी ने अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा दिया था। उसका परिणाम निकला कि हम स्वतन्त्र हुए। आज देश आजाद है परन्तु देश के युवाओं को बुराईयों ने अपना गुलाम बना रखा है। जिसमें नशा सबसे महत्त्वपूर्ण है। स्वामी जी ने युवाओं से आह्वान करते हुए नारा दिया युवाओं बुराईयाँ छोड़ो, यदि आज युवा नशे जैसी बुराईयों को छोड़कर एक सादगी व सदाचारी का जीवन जीने लगे तो फिर से शहीदों के सपनों का भारत बन जायेगा। स्वामी जी ने युवाओं को बुराईयों से दूर रहने का संकल्प भी दिलवाया।

परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र ने कहा कि आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे युवा निर्माण अभियान को और गति दी जायेगी। 23 नवम्बर, 2014 को दस हजार युवाओं का संकल्प समारोह रोहतक में आयोजित किया जायेगा।

कार्यक्रम के संयोजक मा. अशोक आर्य ने बताया कि सात दिन तक चले इस शिविर में आचार्य कर्मपाल, पंकज आर्य (बॉक्सिंग चैम्पियन) सोनू आर्य ने बॉक्सिंग, दण्ड-बैठक, कराटे एवं योगासन का प्रशिक्षण दिया।

समापन अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का सभा प्रधान बनने पर सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। स्वामी जी को ग्राम पंचायत, खेड़ा खाप, आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्ताओं ने शॉल, पगड़ी एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। वीरेन्द्र पहलवान ने गले से सरिया मोड़कर शक्ति प्रदर्शन दिखाया। आज युवक परिषद् बरसोला की इकाई का गठन भी किया गया। जिसमें उत्तम आर्य को प्रधान, सुनील को महासचिव व अनिल आर्य को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया। इस अवसर पर फूल पहलवान, बीरेन्द्र सरपंच, सतपाल पहलवान भी थे।

"वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन"

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुन्द जिले के आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी परिसर में प्रान्तीय स्तर का एक बृहद! "वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन" का आयोजन दिनांक 5 से 7 दिसम्बर, 2014 को आयोजित किया जा रहा है। जिसमें भारतवर्ष के कोने-कोने से सौ से अधिक वैदिक विद्वानों का आगमन हो रहा है। सम्मेलन में वेद के सूक्ष्मतम विषयों पर चिन्तन, चर्चा व संगोष्ठी होगी साथ ही सस्वर वैदिक पाठों से वातावरण सुवाषित होगा। भारतवर्ष के उच्चकोटि के साधु-संन्यासी, विद्वान, आचार्य सहित समाजसेवी महानुभाव व महामहिम राज्यपाल, माननीय मुख्यमंत्री एवं मंत्रीगणों के पधारने की सम्भावना है।

अतः अभी से आप सभी को आयोजन का पावन निमन्त्रण भेज रहे हैं। आयोजन की भव्यता व महत्ता को सार्वजनिक करते हुए अनुरोध है कि इन तिथियों में किसी प्रकार का आयोजन अपने यहाँ न रखें। सम्मेलन में पधार कर अनुगृहित करें।

- आचार्य, आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम, कोसरंगी, पो. -पचेड़ा, जिला-महासमुन्द (छ. ग.), मो.:-9617082000

योग ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) ऊधमपुर जम्मू में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक 14 से 21 सितम्बर, 2014 तक निःशुल्क योग, ध्यान, साधना शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि करायें जायेंगे तथा दर्शन पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इस अवसर पर शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए मोबाइल फोन नं. -0-9419107788, 9419796949 अथवा 9419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

- भारत भूषण आनन्द आश्रम प्रधान

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

thearyasamaj.org

NDPSo on 22/23 अगस्त, 2014 वैदिक सार्वदेशिक 21 से 27 अगस्त 2014
प्रकाशन की तिथि : 21 अगस्त, 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

मिलकर चलो, बोलो

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।

—ऋ० १०/१९१/२

ऋषिः—**संवननः**।। देवता—**संज्ञानम्**।। छन्दः—**अनुष्टुप्**।।

विनय—हे मनुष्यो! सदा मिलकर चलो, मिलकर आचरण करो, मिलकर बोलो और तुम्हारे मन मिलकर सदा एक निश्चय किया करें। यह दैवी नियम है। देव लोग सदा 'संजानानाः' होकर—समान मन और ज्ञानवाले होकर ही—अपने कार्य—भाग को निबाहते आये हैं। असल में यह मनों द्वारा ज्ञान की एकता ही वास्तविक एकता है। मन की एकता होने पर वचन और कर्म (आचरण) की एकता होने में कुछ देर नहीं लगती। देखो, ये देव लोग सब जगह 'संजानानाः' होकर ही कार्य कर रहे हैं। आधिदैविक जगत् में देखो, अग्नि—वायु आदि देव जगत्—संचालन के लिए इकट्ठे होकर अपने—अपने भाग को ठीक—ठीक कर रहे हैं। अध्यात्म में प्राण—इन्द्रिय आदि देवों को देखो कि ये कैसे संगठित होकर जीवन को चला रहे हैं। पैर में कांटा चुभता है तो त्वचा—प्राण—मन—हाथ आदि सब देव एक क्षण में कैसा सहयोग दिखाते हैं। आधिभौतिक जगत् में भी सब ज्ञानी=देव—पुरुष पुराने काल से लेकर आज तक संगठित होकर ही बडी—बड़ी सफलताएँ प्राप्त करते रहे हैं। 'मिलना' दैवी प्रवृत्ति है; क्षुद्र स्वार्थों को न छोड़ सकना और न मिलना आसुरी है, अतः हे मनुष्यों! तुम मिलो, अपने सैकड़ों क्षुद्र स्वार्थों को छोड़कर एक बड़े समष्टि—स्वार्थ के लिए सदा मिलो। लाखों—करोड़ों के मिलकर काम करने से जो तुम्हें बड़ी भारी सामूहिक सिद्धि मिलेगी, उससे फलतः तुम लाखों—करोड़ों में से प्रत्येक व्यक्ति के भी सब सच्चे स्वार्थ अवश्य सिद्ध होंगे। मिलने में बड़ी भारी शक्ति है। तुम मिलकर चलो, मिलकर करो तो कौन—सा कार्य असाध्य है। तुम मिलकर बोलो तो संसार को हिला दो और मिलकर ध्यान करने में तो अपार—अपार शक्ति है, अतः हे मनुष्यो ! मिलो, मिलो ! सब प्रकार से मिलकर अपने सब अभीष्ट सिद्ध करो।

शब्दार्थ—हे मनुष्यो ! **संगच्छध्वम्**=मिलकर चलो, आचरण करो, **संवदध्वम्**=मिलकर बोलो, और **वः**=तुम्हारे **मनांसि**=मन **संजानताम्**=मिलकर ज्ञान प्राप्त करें, समान ज्ञानवाले हों; **यथा**=जैसेकि **पूर्वे देवाः**=पहले के देव लोग **संजानानाः**=मिलकर जानते हुए, एकज्ञान होते हुए **भागम्**=भजनीय वस्तु की, अपने भाग की **उपासते**=उपासना करते, उपलब्धि करते रहे हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :—

अवितरण की दशा में लौटाएँ —
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—110002

श्रावणी महापर्व पर प्रकाशित प्रमाणित जीवन चरित्र

योगेश्वर श्रीकृष्ण

लेखक- स्व. पं. चमूपति एम. ए.
पृष्ठ संख्या-256, मूल्य - 100/- रुपये

पं. चमूपति द्वारा लिखित "योगेश्वर कृष्ण" अनोखा प्रसाद जन साधारण के लिए उपलब्ध है। अप्रतिम विद्वान पं. चमूपति जी ने योगेश्वर कृष्ण का जीवन चरित्र निष्पक्ष एवं प्रमाण सहित लिखा है। यह जीवन चरित्र ज्ञान पिपासु व्यक्तियों के लिए हर प्रकार से पठनीय एवं संग्रहणीय है। यह पुस्तक 23X36 के बड़े साईज पर विलोरपुर टी. ए. कागज पर मुद्रित है तथा कम्प्यूटर द्वारा तैयार की गई है। लैमिनेशन कर टाइटल को अत्यन्त आकर्षक बनाया गया है।

जन्माष्टमी से पूर्व अग्रिम आदेश करने पर यह पुस्तक मात्र 50 रुपये में दी जायेगी। अपनी धनराशि "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर शीघ्र भेजें। दूरभाष संख्या-011-23274771, 23260985 पर सम्पर्क कर सकते हैं।
(डाक व्यय तथा पैकिंग खर्च के 25 रुपये अतिरिक्त देने होंगे।)

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेदों के पुनः प्रकाशन की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली) तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

—: प्रकाशक :—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।